

संपादकीय

दिन फिरेंगे प्रणाम-नमस्ते के?

जब से कोरोना का प्रकोप पूरे विश्व में पसरा है, तब से कई देशों में प्रणाम, नमस्ते, नमस्कार के प्रति लोगों का रुझान बढ़ा है, इनके प्रति पहले से अधिक क्रेज देखा जा रहा है। विदेशों में आम तौर पर प्रणाम-नमस्ते नहीं होता, क्योंकि इस तरह अभिवादन की परंपरा वहाँ नहीं है, बेशक विदेश में रह रहे भारतीय और उनके कुछ मित्रगण नमस्ते करते हैं। जो लोग भारतीय सभ्यता-संस्कृति के प्रति ललक अथवा खोजवृत्ति रखते हैं, उन्होंने भी इसे अपनाया है, पर यह छिटपुट ही है। हर देश-प्रदेश, धर्म-संप्रदाय में अपनी संस्कृति के अनुरूप अभिवादन अभिव्यक्त और स्वीकार होता है। अपनी देशी संस्कृति से दूर बसने वालों पर वास-स्थान के रीति-रिवाजों को अपनाने का नैतिक ही नहीं, बाह्य दबाव भी रहता है। कहीं भी रचने-बसने के लिए ऐसा करना उपयोगी और जरूरी है, अन्यथा अलग-थलग पड़ने और असंगत महसूस करने के सिवा कोई चारा नहीं होगा। फिर कार्य में दिक्कतें आएँगी और संभव है, वह छूट जाए। इसलिए जहाँ रहना है, वहाँ की स्थानीय विशिष्टताओं को तात्कालिक रूप से अंगीकार करने में हर्ज नहीं, लेकिन अपने मूल स्थानीय संस्कारों को एकदम छोड़ देना मुनासिब नहीं। यहाँ गुण-दोष के आधार पर अभिवादन की शैली को अपनाने या छोड़ने की बात नहीं, वरन् जब जैसा समय और परंपरा है, उसके अनुरूप चलने की बात है।

प्रणाम, नमस्ते, नमस्कार, आशीर्वाद, आशीर्वचन आदि अभिवादन के विशुद्ध भारतीय सलीके हैं, जिनमें आलंबन के प्रति श्रद्धा, नम्रता, सख्य, वात्सल्य भाव की जागृति होती है, कुछ सात्विक अनुभाव स्वतः उत्पन्न होते हैं, तदनुसार शारीरिक हाव-भाव से क्रिया-प्रतिक्रिया होती है और वाचिक उच्चारण जो होता है, वह तो होता ही है। यदि अभिवादन के साथ सात्विक भाव जागृत नहीं होते तो इसका मतलब है कि अभिवादन अधूरा है, बनावटी है, बेमन से औपचारिकता निभाने मात्र के लिए किया गया है। यद्यपि भागदौड़ के माहौल में अंतर्मन के भाव को पढ़ने की किसी को न फुर्सत है और न इसे व्यक्त करने का एहसास रहता है। समाज बनावटी व्यवहारों में जीने का आदी है, इसलिए लोग जल्दी-जल्दी अभिवादन की रस्में निभाते हैं, पर यह अभिवादन के मूल उद्देश्यों के विपरीत है। अभिवादन से आयु, विद्या, यश और बल तभी बढ़ते हैं, जब वह मन के भावों से युक्त हो - 'अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः, चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलं।' श्रीराम माता-पिता एवं गुरुजनों को नित्य प्रणाम करते हैं - 'प्रातःकाल उठि कै रघुनाथा, माता पिता गुरु नावहि माथा', इसलिए भी वे मर्यादा पुरुषोत्तम हैं।

बहरहाल, हर समाज में अभिवादन के विशिष्ट तौर-तरीके हैं, जिन्हें यों ही सही-गलत नहीं ठहराया जा सकता। पश्चिमी दुनियाँ के लोग हाथ मिलाते हैं, गले मिलते हैं और आवश्यकतानुसार चुंबन भी बेहिचक लेते-देते हैं। चाहे स्त्री हों या पुरुष, उनसे गले मिलकर या चुंबन करके अभिवादन करना ठेठ भारतीयों को थोड़ा असहज करता है, किंतु यह द्रष्टव्य है कि यह मन के विकारों को शारीरिक शुचिता से एकदम पृथक् करता है। पुरातन चिंतन में माना जाता है कि कोमल संस्पर्श से मन में कामुक विकार उत्पन्न होते हैं और इसी कारण नितांत एकांत में किसी भी युवती यहाँ तक पुत्री तक से दूर रहने की नसीहत दी गई है, ताकि मन के किसी कोने में किसी तरह के गलत विचार न पनपें। अभिवादन के संस्पर्श में भावनों का जागृत होना मुश्किल नहीं है, भले ही वह बाह्य रूप में प्रकट न हो। अस्तु, अमेरिकी-यूरोपीय-अफ्रीकी लोग इस मामले में अनूठे हैं, क्योंकि वे दूर रहकर विकारों से दूर नहीं रहते, वरन् संस्पर्श के बावजूद निर्विकार रहते हैं, शुचिता को शारीरिक स्पर्श से नहीं जोड़ते; हालाँकि हाथ जोड़कर प्रणाम करने में जैसे जरूरी नहीं कि मन का भाव भी सम्मिलित हो, वैसे ही गले मिलने या चुंबन करने में भी जरूरी नहीं कि सदैव निर्लिप्तता ही रहे, पर उसकी प्रमुखता तो रहती ही है, नहीं तो अभिवादन ओछे प्रदर्शन के सिवा कुछ नहीं लगता। भारतीय मनीषा भी निर्विकारता के लिए सबसे दूर रहकर पाक-साफ रहने को आवश्यक नहीं मानती, वरन् सारी बुराइयों और आसक्तियों के बीच रहते हुए भी अनासक्त रहने को मानती है। अभावों की

मजबूरी में तो अनासक्त रहना ही पड़ता है, हालाँकि मन की कामनाएँ व्यग्र रह सकती हैं। अभोग अथवा त्यागपूर्ण भोग की स्थिति भोग के अभाव में नहीं, बल्कि भोग्य वस्तुओं के साथ रहकर उनसे विलग रहने से बनती है।

सनातन धर्म में हाथ जोड़कर, चरण स्पर्श करके और साष्टांग दंडवत करने की परिपाटी है। इसके अलावे सिर झुकाकर, हाथ जोड़ते हुए सिर झुकाकर, हाथ जोड़ते हुए दोनों घुटने झुकाकर, हाथ जोड़ते हुए घुटने व सिर झुकाकर प्रणाम किया जाता है। साष्टांग दंडवत के अंतर्गत भूमि पर सीधे लेटकर मस्तक-सिर, छाती-हृदय, मन, हाथ, पैर, जाँघ, ठोड़ी-वचन, दृष्टि - शरीर के ये आठ अंग प्रणाम में शरीक होते हैं - 'पद्भ्यां कराभ्यां जानुभ्यामुरसा शिरस्तथा, मनसा वचसा दृष्ट्या प्रणामोऽष्टांग मुच्यते।' योग-साधना की अवस्था में भी परमात्मा के प्रति प्रणम्य भाव जागृत करके चित्त को तल्लीन किया जाता है; शरणागत भाव से ईश्वर की शरण में जाया जाता है। मुस्लिमों का नमाज भी कुछ हद तक इससे मिलता-जुलता है। मुस्लिम साधारण तौर आदाब-सलाम कहते हुए अभिवादन करते हैं। पुलिस-सेना के लोग प्रायः अपने शार्गिदों को सलाम की तर्ज पर सैल्यूट करते हैं या हाथ मिलाते हैं और इसी रूप में प्रत्युत्तर मिलता है। इसे सैन्य-पुलिसिया सलाम माना जा सकता है। राष्ट्रध्वज को इसी तर्ज पर सलामी दी जाती है। प्राचीन समय में अस्त्र-शस्त्रों से विशेषकर बाण से भी प्रणाम करने की परंपरा थी। वर्तमान में भी तोप, बंदूक, रायफल, तलवार से सलामी दी जाती है।

धार्मिक अनुष्ठानों-कर्मकांडों से परे, अभिवादन की परंपरा एकतरफा नहीं निभती, वरन् दुतरफा होती है, अर्थात् अभिवादन करने वाले को उत्तर-प्रत्युत्तर मिलता है। गले मिलने वालों से गला मिलना, हाथ मिलाने वालों से हाथ मिलाना, चुंबन करने वालों से चुंबन करना सामान्य शिष्टाचार है। इस्लाम में सलाम को सन्नत और जवाब को जरूरी कहा गया है। जहाँ इसका अनुपालन नहीं होता, वहाँ उसे अशिष्टता माना जाता है, जैसे तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जब पाकिस्तान यात्रा पर गए थे, तब उस समय के पाकिस्तानी थल सेना प्रमुख परवेज मुशर्रफ ने हाथ मिलाने से परहेज किया था। यह घटना सुर्खियों में आई थी हालाँकि बाद में जब वे पाकिस्तान के स्वघोषित राष्ट्राध्यक्ष बने, तो उन्होंने नेपाल के सार्क सम्मेलन में वाजपेयी जी से अनपेक्षित हाथ मिलाया था। अस्तु, भारत में अभिवादन का जवाब देने के लिए अलग-अलग नियम निर्धारित हैं। यदि प्रणाम छोटों द्वारा किया जाता है तो उन्हें आशीर्वाद दिया जाता है, आशीर्वचन कहा जाता है और कोई चरण-स्पर्श करता है तो उसके सिर पर हाथ भी रखा जाता है। यदि कोई हाथ जोड़ता है तो उसे हाथ उठाकर आशीर्वाद देने की रीति है। बराबरी वाले जैसा अभिवादन करते हैं, वैसा ही उन्हें उत्तर मिलता है। कोई कितना ही बुरा या दुश्मन ही क्यों न हो, यदि प्रणाम करता है तो वह कुछ-न-कुछ पा जाता है। 'महाभारत' की एक घटना बहुत रोचक है। महाभारत युद्ध शुरू होने से ठीक पहले कुरुक्षेत्र के मैदान में कौरव पक्ष के सभी आत्मीय शत्रुओं के समीप जाकर युधिष्ठिर ने उन्हें सादर प्रणाम किया, जिस पर कौरव सेनापति भीष्म पितामह, द्रोण, कृपाचार्य, शल्य आदि ने युधिष्ठिर को खाली आशीर्वाद ही नहीं दिए, वरन् अपने पक्ष के सर्वोत्तम हित से उलट जाकर विजयश्री का आशीर्वाद दिया। दुर्योधन के आगबबूला होने पर भीष्म ने उसे समझाया कि जब कोई प्रणाम करता है, तब आशीर्वाद के लिए हाथ और मन से स्नेह सहसा उमड़ता ही है। यदि तुमने भी उसे प्रणाम किया होता तो तुम्हें विजय का आशीर्वाद अवश्य मिलता। खैर, आशीर्वाद तो भीष्म ने दिया, पर वे खुद पांडवों की विजय के सबसे बड़े बाधक थे। इसलिए एक रात पांडवों ने जाकर उनके आशीर्वाद को लौटाना चाहा, क्योंकि उनके रहते जब पांडवों की विजय हो ही नहीं सकती तो फिर ऐसे आशीर्वाद का क्या मतलब रह जाता है। आशीर्वाद के फलीभूत होने में उसे प्रदान करने वाला ही सबसे बड़ी बाधा था, अंतः भीष्म ने स्वयं को युद्धक्षेत्र से हटाने होने का उपाय बताया और तब उन्हें शिखंडी की आड़ में शर-शैय्या पर लेटाया जा सका।

बहरहाल, सनातनी अभिवादन पद्धति हाथ मिलाने, चूमने, गले मिलने के दैहिक उपक्रम की बजाय मन, मस्तिष्क व हृदय की भावना से श्रद्धा, प्रेम, भक्ति, भाईचारा, मित्रता, स्नेह, वात्सल्य पर जोर देने का उद्गार है; बेशक इसमें शारीरिक हाव-भाव का भी महत्त्व है, पर मुख्य है मन-हृदय की निश्छल भावना, जो जरूरी नहीं कि बाह्य स्तर पर झलके। भाव से परे वाचिक व शारीरिक अभिवादन दिखावा ही नहीं, चकमा भी साबित होता है, इसलिए प्रपंच रचने वाले, छल-छद्म करने वाले लोग भी अभिवादनों की औपचारिकता निभाते हैं। भारतीय

अभिवादन मानसिक, आत्मिक अभिव्यंजना अधिक है। पश्चिमी अभिवादन पद्धति शरीर केंद्रित, प्रेमपरक और अभिव्यक्तिपरक है, जबकि भारतीय अभिवादन पद्धति आत्मपरक और हृदयोन्मुख है। वैसे भी भारत का चिंतन आत्मपरक-प्रकृतिपरक है, पश्चिम का भौतिक पदार्थपरक। वहाँ शारीरिक-मानसिक मिलन वाला अभिवादन श्रेष्ठ है तो यहाँ आत्मिक-हार्दिक मिलन का अभिवादन उत्तम है। हार्दिक व मानसिक अभिवादन के लिए न साकार आलंबन की जरूरत है और न साकार आश्रय की। यह कहीं से किसी को किया जा सकता है। एकांत की योग-साधना, तप, पूजा-अर्चना, ध्यान आदि में पराशक्ति के प्रति नतमस्तक हुआ जाता है, जबकि अनेक बार आमने-सामने अभिवादन होने पर भी औपचारिक रस्में निभाने के सिवा तदनु रूप भाव नहीं उत्पन्न होता। 'रामायण' के प्रसंग में अशोक वाटिका में पहुँचकर हनुमान छुपकर सीता को देखते हैं और दूर से ही मन-ही-मन प्रणाम करते हैं -

करिं सोइ रूप गयउ पुनि तहवाँ। बन अशोक सीता रह जहवाँ।।

देखि मनहि महुँ कीन्ह प्रणामा। बैठेहिं बीति जात निसि जामा।।

जो भारतीय हाथ मिलाने, गले मिलने, चूमने को आधुनिकता की पहचान और सभ्य सलीका मानते हैं और हाथ जोड़ने को पिछड़ेपन का पर्याय तथा गुजरे जमाने की अदा मानकर त्याग चुके हैं, उन्हें अब सोचना पड़ेगा, क्योंकि जिन शिक्षा-सभ्यताओं और संपर्कों से विकसित संस्कारों के कारण वे ऐसा मानने-समझने लगे थे, उन्होंने ही हाथ जोड़कर प्रणाम-नमस्ते को वरीयता देना शुरू कर दिया है और वह भी सार्वजनिक तौर पर। अब भारत में शोरगुल शुरू है कि भारतीय अभिवादन पद्धति कितनी अच्छी और उपयोगी है कि विदेशी भी इसे अपना रहे हैं। जब किसी चीज को बाहर वाले अच्छा बता देते हैं तो उसकी अहंता फट समझ में आ जाती है, लेकिन इससे पहले वह बाबा आदम के जमाने की चीज और कुरुढि लगती है, उस पर शोधवृत्ति या विवेकसम्मत ढंग से सोचने की जरूरत नहीं लगती। यह विस्मृत कर दिया गया है कि पुरानी या देशी होने के कारण न कोई चीज त्याज्य हो जाती है और न आयातित या नई होने के कारण स्वीकारणीय। अब कोरोना के डर से ही सही, एकांत में अपनी आवश्यकताओं को सीमित कर काम चलाया जा सकता है और अभिवादन के लिए स्पर्श से परे जो परंपरा-पद्धतियाँ प्रचलित हैं, उन्हें अपनाया जा सकता है। इसे विवशता की तरह नहीं, हर्ष-गर्व के साथ अपनाना समुन्नत होने की पहचान है।

स्पर्श-संपर्क सभी प्रकार के संक्रमण का बड़ा कारण है। कोरोना का वायरस भी छूत से फैलता है। वैज्ञानिकों का मानना है कि एक व्यक्ति के संक्रमित होने से हजारों लोगों के संक्रमित होने का खतरा है, इसलिए शारीरिक स्पर्श वाले अभिवादन से बचना इसके संक्रमण से बचने का कारगर उपाय है, क्योंकि पता नहीं किसे कोरोना का संक्रमण है और किसे नहीं। मिलने पर कुछ तो अभिवादन अपेक्षित होता है, इसलिए विश्व के कई देशों ने अभिवादन के भारतीय शिष्टाचार को आपद् धर्म की तरह अपनाना शुरू कर दिया है। 'हाय' कहकर गले मिलने वाले एवं हाथ मिलाने वाले और 'बॉय' कहकर हाथ हिलाते हुए बिछुड़ने वाले यदि कोरोना की हाय को 'बॉय', 'टा-टा' कहना चाहते हैं तो उन्हें दूर से ही हाथ जोड़कर, सिर झुकाकर प्रणाम, नमस्ते, नमस्कार करना चाहिए और छूकर आशीर्वाद देने के लोभ का संवरण करना चाहिए, अन्यथा 'हाय', 'हेलो' के चक्कर में चोरी-छुपे कोरोना से ही 'हाय', 'हेलो' हो जाएगा और दूसरी ओर, जिससे सीधे 'हाय' 'हेलो' की चाहत होगी, वह दूर से ही 'बॉय-बॉय', 'टा-टा' कह देगा।